चीनी नववर्ष २०२० : मूषक-वर्ष

चीनी राशि चक्र, बारह वर्षीय चक्र पर आधारित है, जिसमें हर एक वर्ष एक अलग पशु से जुड़ा है। ऐसा माना जाता है कि किसी विशिष्ट वर्ष में जन्म लेने वाले लोग व स्वयं वह वर्ष, उस वर्ष के प्रतीकात्मक पशु के गुणों को प्रतिबिम्बित करते हैं। वर्ष २०२० में, चन्द्रतिथि के अनुसार, चीनी नववर्ष शनिवार यानी २५ जनवरी को है। यह दिन मूषक-वर्ष [मूषक अर्थात् चूहा] के आरम्भ का द्योतक है जोकि चीनी राशि चक्र, के बारह वर्षीय समयचक्र का पहला पशु है।

कहा जाता है कि मूषक के वर्ष में जन्म लेने वाले लोगों में पैनी नज़र व सकारात्मक दृष्टिकोण होता है और उनके मन में लचीलापन होता है। उनका व्यक्तित्व प्रसन्नचित्त व सामाजिक होता है यानी वे लोगों से बात करने में अति सहज होते हैं। जब इन लोगों के सामने कठिनाइयाँ आती हैं तो उनके निर्भीक व सकारात्मक लक्षण उजागर होते हैं। विशेष बात है कि, वे अपने चारों ओर के वातावरण को शीघ्र ही समझ लेते हैं और बदलती परिस्थितियों में स्वयं को ढाल लेते हैं।

चूहे की दौड़

सिन्धु पोर्टर द्वारा पुनर्लिखित एक कहानी

बात उस समय से भी पहले की है जब विश्व की व्यवस्था व इसकी कार्यप्रणाली सुचारु रूप से चलाने वाली, देवी 'नू वा', भूलोक पर उतरीं और उन्होंने मानव की रचना की। जब उनका कार्य पूरा हो गया तब वे अपने पति, स्वर्गाधिपति के महल लौट गईं। पृथ्वी पर अपनी पहली यात्रा पर 'नू वा' ने देखा कि जगमगाता सूरज और ख़ूब सारी बारिश इस मिट्टी को प्यार से दुलार रही हैं। देवी को यह संसार सचमुच एक चमत्कार-सा लगा।

तथापि, 'नू वा' अभी घर पहुँची ही थीं कि महाराज ने उनसे एक ऐसा कार्य करने का अनुरोध किया जो अचम्भित कर देने वाला था। देवी को तत्काल धरती पर लौटना था और उस बड़े-से छेद की मरम्मत करनी थी जो ऊपर आकाश में हो गया था। कैसे भी हो, 'नू वा' को वह छेद जल्द-से-जल्द ठीक करना था।

अपनी दिव्य शक्तियों से 'नू वा' ने एक रंगबिरंगा पत्थर उस छेद में लगाया जिससे वह फिर से भर जाए। ऐसा करने के लिए उन्होंने धरती पर रहने वाले महाकच्छप [कछुआ] के चार पैरों का उपयोग किया ताकि आकाश को ऊपर थामा जा सके। भले ही यह तरक़ीब काफ़ी हद तक प्रभावी और व्यावहारिक थी, परन्तु पृथ्वी की संरचना में किए गए इस बड़े परिवर्तन से भूकम्प आ गया जिसने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया। ज़मीनें धँस गईं और प्रचण्ड बाढ़ आ गई। इससे पृथ्वी के सागरों में जल का स्तर बहुत बढ़ गया। 'नू वा' ने जिस नाशवान लोक को बनाकर इतने प्यार से गले लगाया था वह अचानक एक असामान्य विपदा को झेल रहा था।

स्वर्गाधिपति ने जलदेवता को बाढ़ रोकने का आदेश दिया ताकि मानवता को विलुप्त होने से बचाया जा सके। बहुत मेहनत के बाद, बड़ी मुश्किल से जलदेवता पानी को रोकने में क़ामयाब हो पाए। फिर भी कुछ स्थानों पर अब भी बाढ़ के हालात बने हुए थे। मानवता थक गई थी; उनमें अब उफ़नती लहरों का सामना करने की ताक़त नहीं बची थी।

इस धरा पर रहकर इसकी रक्षा व देखभाल करने वाले असंख्य जीव, क्षण भर में ही बिजली की तरह जलदेवता के सामने एक दृष्टान्त के रूप में कौंध गए। उन सभी ने अपनी सुरक्षा के लिए, भागकर पहाड़ों में ऊँचे स्थानों पर आश्रय ले लिया था। ऐसे में जलदेवता उन्हें कैसे ढूँढ़ पाते? परन्तु वे अपने काम-काज में इतने व्यस्त थे कि खुद यह कार्य करने के लिए नहीं जा सकते थे, इसलिए उन्होंने अपने सहायक 'यू' को भेजा कि वह सभी जानवरों को खोजे और मदद करने के लिए उनसे विनती करे।

पृथ्वी को बचाने हेतु असंख्य जानवरों को इकट्ठा करने का दुष्कर कार्य सौंपे जाने पर, 'यू' ने प्रार्थना की, "धरती के सभी प्राणी सुरक्षित रहने के लिए पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियों पर जाकर छिप गए हैं! मैं उन्हें यहाँ कैसे लाऊँगा?" इतना कहकर वह रुक गया। उसे नहीं पता था कि अब वह क्या करे।

तभी 'यू' ने नीचे देखा और उसकी नज़र ज़मीन पर एक अकेले चूहे [मूषक] की ओर गई। चूहा जो घबराकर इधर-उधर भाग रहा था, वह हड़बड़ाकर रुक गया था। उस क्षण, 'यू' को दिखा कि वह नन्हा-सा एक जीव ही सही, पर उस छोटे-से जीव को देखकर यू को बड़ी राहत मिली!

साथ ही यह देखकर 'यू' को आश्चर्य भी हुआ कि इस प्रलय के क्षण में, भला यह गन्दा-मैला-सा चूहा उसे मिला तो कैसे। तभी उसे ध्यान आया कि चूहे तो वहीं जीवित रहते हैं जहाँ इंसान होते हैं। जलदेवता की सहायता करने के लिए उसे बस एक ही प्राणी मिला — यह चूहा। तो, 'यू' ने अपना हाथ बढ़ाकर उस चूहे को पकड़ लिया और उसे अपने दुशाले की तहों में रख लिया।

बाढ़ का पानी पल-पल बढ़ता ही जा रहा था। अपने हाथ में इस काँपते हुए जीव को जलदेवता की इच्छा के बारे में बताने पर 'यू' का मन हल्का हो गया; उसके मन में इस जीव के प्रति कृतज्ञता हज़ारों गुना बढ़ गई। और इधर, चूहा तुरन्त समझ गया कि जिस व्यक्ति ने उसे उठा रखा है, उस व्यक्ति का मक़सद बुरा नहीं था, जैसा कि चूहा पहले समझ बैठा था। तो चूहा 'यू' की मदद करने और इस संसार की रक्षा करने के लिए अन्य जानवरों को इकट्ठा करने के लिए झट-से तैयार हो गया ।

अपने साथियों के साथ, वह चतुर चूहा पेड़ों में और पहाड़ों की तलहटी में छिपे बहुत सारे जानवरों को बाहर ले आया। उसने जानवरों के राजा, शेर तक को मना लिया कि वह पहाड़ों की ऐसी-ऐसी ऊँचाइयों से नीचे उतरने के लिए जानवरों की सेना का मार्गदर्शन करे जहाँ से नीचे देखने पर किसी को चक्कर ही आ जाए। छोटे-बड़े सभी जानवर दौड़ने लगे; बचीखुची सूखी ज़मीन पर खड़े होकर वे इंसानों के साथ मिलकर, बढ़ते हुए पानी को रोकने की कोशिश करने लगे।

अतः इंसानों व जानवरों ने साथ मिलकर आख़िकार बाढ़ को रोक ही लिया। जलदेवता के निर्देशन में, चूहे के निडर स्वभाव के कारण जो बहादुर जीव एकत्र हुए थे, वे सभी मिलकर पृथ्वी की रक्षा कर सके। एकजुट होकर वे पृथ्वी की सुन्दरता और विविधता का संरक्षण करने में सफल हो गए।

इस अद्‌भुत क़ामयाबी को यादगार बनाने के लिए, स्वर्गाधिपति ने एक घोषणा की जिसे वहाँ उपस्थित सभी ने सुना। जिन जानवरों ने पृथ्वी को बचाने के लिए कोशिश की थी उन्हें स्वर्गाधिपति द्वारा ऐसी उपाधि से नवाज़ा जाएगा जिसे अनन्त काल तक याद रखा जाएगा। महाराज ने स्पष्ट किया कि उन्होंने सुदूर स्थान पर एक चमचमाती पूजा-वेदी तैयार की है, और वह वेदी पावन वस्तुओं से सजी हुई है ताकि उस परम दिव्य शक्ति-स्रोत की अभिस्वीकृति कर उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जा सके जिसने संसार के भविष्य को सुरक्षित किया है।

बुलन्द आवाज़ में स्वर्गाधिपति ने घोषणा की, "दौड़ में जो बारह जानवर इस पावन पूजा-वेदी तक पहुँचेंगे, वे चीनी राशिचक्र के बारह देवता बनेंगे। आज के बाद साल-दर-साल उनका सम्मान किया जाएगा!"

जानवरों की दौड़ शुरू होने से पहले की रात, वह चतुर चूहा सोचने लगा कि इस वेदी तक कैसे पहुँचा जाए। वह भागा — पहले एक ओर, फिर दूसरी ओर; अन्दाज़ा लगाया कि सबसे अच्छा रास्ता कौन-सा होगा। वह इस पवित्र, प्रतिष्ठित वेदी तक भला सबसे पहले कैसे पहुँच पाए?

तभी चूहे को छुपने की सबसे अच्छी जगह सूझी — वो चुपचाप जाकर बैल के दमदार सींग में सुरक्षित जगह पर बैठ गया। दौड़ के दौरान चूहा नज़र नहीं आएगा, जबकि बैल के दौड़ने के साथ-साथ वह भी आगे-आगे बढ़ता जाएगा। एक बात तो चूहे को अच्छी तरह पता थी : सबसे ताक़तवर, सबसे दृढ़संकल्प होने के कारण बैल बाकी सभी से आगे निकल जाएगा और स्वर्गाधिपति द्वारा निश्चित की गई वेदी तक पहुँच जाएगा।

चूहे ने सोचा : "अगर मैं राशिचक्र का पहला देवता बन भी जाऊँ, तो मैं निश्चित तौर पर यह जानता हूँ कि बैल इस बात का बुरा नहीं मानेगा कि मैंने उसके सुडौल सींगों पर यात्रा की। अगर मुझे इनाम मिला तो बैल अपने ईमानदार और स्थिर स्वभाव के कारण, यह स्वीकार कर लेगा।" चूहा जानता था कि दौड़ का नतीजा चाहे जो भी हो, उसका दोस्त स्वर्गाधिपति की आज्ञा का पालन करेगा।

सुबह हो गई; बड़ी ख़ूबसूरत और शान्त सुबह थी वह। उस दिन उगते सूरज की किरणें बड़ी असाधारण तेजस्विता के साथ धरती को स्पर्श कर रही थीं। उफ़नता हुआ पानी शान्त हो गया था और पिछले कुछ दिनों से चल रही भयानक घटनाओं से राहत पाकर ज़मीन चमक रही थी। अनगिनत पक्षी मधुर सुरों में गुनगुनाने लगे; उन जानवरों के खुरों, पंखों और नाखूनों वाले पँजों की आवाज़ें आने लगीं जो अपने मनचाहे लक्ष्य को साधने के लिए बिलकुल तैयार थे। दौड़ शुरू होने से पहले, पल भर के लिए शान्ति-सी छा गई।

जैसी कि चूहे को उम्मीद थी, उस सुबह दृढ़-संकल्पी और एकाग्रचित्त बैल जल्द-ही आगे निकल गया और पूरी दौड़ के दौरान कोई भी उसके आगे जा न सका।

और फिर चूहे ने कुछ ऐसा किया जो किसी ने सोचा भी न होगा। बैल चमचमाती वेदी पर पहुँचने ही वाला था कि चूहे ने अपने पैर मोड़ लिए। फ़र्राटे-से, वह अपने आश्रय-स्थल, बैल के सींग में से बाहर निकला और आगे की ओर एक लम्बी छलाँग लगाई। जीत की ख़ुशी से भरी ज़ोरदार आवाज़ के साथ वह वेदी पर सजे गुलाबी पिओनीज़ फूलों के गुलदस्ते के पास जा उतरा।

वहाँ इकट्ठा सभी का ध्यान बैल के लिए ज़ोर-ज़ोर-से ताली बजाने पर था, कि अचानक सभी आश्चर्यचकित रह गए कि चूहे को यह शानदार क़ामयाबी भला मिली तो कैसे! पूरे मैदान में फुसफुसाहट का स्वर छा गया, "क्या चूहे का ऐसा करना सही था कि वह आधे-से ज़्यादा रास्ता किसी और के सींग पर सवारी करके जीत हासिल करे?" सच कहें तो किसी को भी यह नहीं लग रहा था कि चूहा इनाम का हक़दार है।

चूहे में गुण होने के बावजूद, सभी यही सोच रहे थे कि चूहा किसी-न-किसी तरह उन अन्य जीवों से कमतर ही था जिन्होंने दौड़ में भाग लिया था। क्या यह उसका कद था जिसके कारण लोगों ने मन ही मन उसे अयोग्य मान लिया था? या फिर, क्या ऐसा था कि उसकी चतुराई और चालकी के कारण, उसकी अच्छी प्रतिष्ठा नहीं थी? दरअसल, इसी लक्षण के कारण ही तो चूहा इतनी सदियों से टिका रहा था।

अन्त में कोई भी इस बात से इन्कार न कर सका कि चूहे ने स्वर्ग की पूजा-वेदी तक सबसे पहले पहुँचने की बेहतरीन तरक़ीब खोज निकाली थी। यह मान लिया गया कि चूहा ही वह था जिसने स्वर्गाधिपति के मुख से निकले आदेश का अक्षरशः पालन किया था। चूहे को अनन्त काल तक चीनी राशिचक्र का

पहला जानवर होने का नाम दे दिया गया। पैनी नज़र वाले, अत्यन्त बुद्धिशाली और परिस्थितियों के साथ अपने आपको ढाल लेने वाले, लचीलेपन के गुण वाले चूहे ने यह दिखा दिया कि युक्तिपूर्वक अपना काम बना लेना उसका जन्मजात गुण है।

और-तो-और, उसने सद्‌गुणों की इतनी सारी मिसालें क़ायम कर दीं कि महाराज ने उसकी ग़लती के लिए उसे माफ़ कर दिया। स्वर्ग के न्याय का तराज़ू चूहे की ओर झुक गया और उस दिन से चूहा एक प्यारा-सा विजेता बन गया।

नतीजे आने पर, अपने कहे के अनुसार स्वर्गाधिपति ने सभी जानवरों को सम्मानित किया। उस दिन उन्होंने जो घोषणा की थी वह कभी नहीं बदलेगी। चूहे को सम्मानपूर्वक तथाकथित स्थान प्रदान किया गया और उसे चीनी राशिचक्र के क्रम में पहला स्थान दिया गया। छोटे कद और चालाकी-भरे तरीक़ों के बावजूद, चूहा यानी मूषक धरती पर सभी जीवों से श्रेष्ठ साबित हुआ।

भले ही महाराज की आज्ञा पूरी हो गई हो, जानवरों के बीच की दौड़ का निर्णय हो गया हो, पर वह कौन था जिसके कारनामों ने सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था? वह कौन था जिसकी कहानी सदा के लिए अमर हो गई? हाँ, आपने सही अनुमान लगाया : चूहा, मूषक! आज भी मूषक की क़ामयाबी हर किसी की यादों में बसी है।

जिन लोगों का भी जन्म मूषक-वर्ष में हुआ है, उन्हें ख़ुद को सौभाग्यशाली समझना चाहिए और ख़ुश होना चाहिए कि उन्हें मूषक का चातुर्य, सकारात्मकता, लचीलापन, परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढालने की योग्यता और पैनी नज़र जन्मजात रूप में मिली है।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।